कश्मीर की सांस्कृतिक विरासत और जैन धर्म: एक ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक अनुशीलन

-जैन आचार्य विजय रत्नाचल सूरि

शोध सार :

कश्मीर, जिसे धरती का स्वर्ग और श्रुत की देवी शारदा की पुण्य भूमि कहा जाता है, अपने गर्भ में असीम ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहर समेटे हुए है। वर्तमान में कश्मीर की पहचान शैव मत और सूफी परंपराओं से अधिक जुड़ी है, लेकिन प्राचीन काल में यह क्षेत्र जैन धर्म का एक प्रमुख केंद्र रहा है। इस शोध आलेख का उद्देश्य 'राजतरंगिणी', 'आईन-ए-अकबरी' और 19वीं शताब्दी में हुए पुरातात्विक उत्खननों के आधार पर कश्मीर में जैन धर्म की ऐतिहासिक उपस्थिति को सिद्ध करना है। यह आलेख प्रसिद्ध ओरिएंटलिस्ट एडवर्ड थॉमस (1877) और पुरातत्वविद डॉ. स्टीन (1890) के उन दुर्लभ शोधों को पुनर्जीवित करता है, जो पुरातात्विक प्रमाणों के साथ यह स्थापित करते हैं कि सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म से पूर्व कश्मीर में जैन धर्म का प्रचार किया था। साथ ही, सिंहपुरा (मूर्ति) से प्राप्त प्राचीन स्तूप, लाहौर संग्रहालय में स्थित पिलर और चंडीगढ़ संग्रहालय में संरक्षित प्रतिमाओं का विश्लेषण भी प्रस्तुत किया गया है। कश्मीर के 'सतिसर' से लेकर 'पुरानाधिष्ठान' (पंद्रेथान) तक की ऐतिहासिक यात्रा इस आलेख का मुख्य विषय है।

बीज शब्द (Key Words): कश्मीर, जैन धर्म, राजतरंगिणी, सम्राट अशोक, एडवर्ड थॉमस, आईन-ए-अकबरी, सिंहपुरा, डॉ. स्टीन, पुरातात्विक साक्ष्य, लाहौर संग्रहालय, शारदा पीठ, पंद्रेथान, जैन मूर्तिकला, काश्मीरपुर।

प्रस्तावना:

हिमालय की गोद में बसा कश्मीर सदियों से भारतीय संस्कृति, ज्ञान और आध्यात्म का मुकुटमणि रहा है। 'धरती का स्वर्ग' कही जाने वाली यह भूमि केवल अपने

नैसर्गिक सौंदर्य के लिए ही नहीं, अपितु अपनी बौद्धिक और धार्मिक सहिष्णुता के लिए भी जानी जाती है। यह श्रुत देवी शारदा की पुण्य भूमि है, जहाँ ज्ञान की धारा वितस्ता (झेलम) की तरह अविरल बहती रही है। वर्तमान भू-राजनैतिक परिस्थितियों और काल के थपेड़ों ने कश्मीर के इतिहास की कई परतों को धुंधला कर दिया है। आज जब हम कश्मीर की बात करते हैं, तो अक्सर जैन धर्म का संदर्भ छूट जाता है, जबकि इतिहास साक्षी है कि एक कालखंड में कश्मीर में जैन धर्म न केवल जीवित था, बल्कि राजश्रय प्राप्त कर पूर्ण वैभव पर था।

कश्मीर के प्रामाणिक इतिहास को जानने का मुख्य स्रोत कल्हण कृत 'राजतरंगिणी' (ई.स. 1148-49) है। परन्तु 19वीं सदी के ब्रिटिश पुरातत्वविदों और विद्वानों ने जब कश्मीरी इतिहास की परतों को उधेड़ा, तो ऐसे चौंकाने वाले तथ्य सामने आए जिन्होंने कश्मीर में जैन धर्म की प्राचीनता को मौर्य काल तक पीछे ले जाकर स्थापित कर दिया।

प्राचीन साहित्य में कश्मीर और जैन धर्म के साक्ष्य :

कश्मीर के प्राचीन नामों में से एक 'सतिसर' का उल्लेख संस्कृत साहित्य में मिलता है। यह माना जाता है कि कश्मीर घाटी पहले एक विशाल सरोवर थी। राजतरंगिणी के श्लोक इस बात की पुष्टि करते हैं कि इस भू-भाग पर 'जैन नगर' एक प्रमुख स्थल था। कल्हण लिखते हैं:

> "सतिसरासारं शारिका शैल भूषितम्।"
> (अर्थात्: सतिसर की धरती शारिका पर्वत से सुशोभित है।)
> सबसे महत्वपूर्ण उल्लेख जैन नगर के बारे में है:
> "श्री जैन नगरादस्माकानोपवन-विभूषितम्।।"
> (अर्थात्: यह भूमि श्री जैन नगर से अलंकृत है, जिसे उपवनों ने सजाया है।)

ये उद्धरण स्पष्ट करते हैं कि कश्मीर में जैन धर्म केवल एक मत नहीं था, बल्कि वहां की संस्कृति और भूगोल का हिस्सा था। 'जैन नगर' और 'काश्मीरपुर' की रमणीयता का वर्णन यह दर्शाता है कि यह क्षेत्र धार्मिक और सांस्कृतिक समृद्धि का प्रतीक था।

सम्राट अशोक और जैन धर्म: आईन-ए-अकबरी और एडवर्ड थॉमस का मत

कश्मीर में जैन धर्म के प्रचार का श्रेय प्रायः सम्राट अशोक को जाता है। यह तथ्य ऐतिहासिक दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि अशोक को मुख्य रूप से बौद्ध धर्म के प्रचारक के रूप में जाना जाता है। किन्तु, ऐतिहासिक दस्तावेज और मुगलकालीन ग्रंथ एक भिन्न कहानी कहते हैं।

प्रसिद्ध प्राच्यविद्याविद् (Orientalist) एडवर्ड थॉमस ने वर्ष 1877 में अपनी पुस्तक "Jainism or The Early Faith of Asoka" में एक क्रांतिकारी तथ्य प्रस्तुत किया। उन्होंने 26 फरवरी 1877 को रॉयल एशियाटिक सोसाइटी की सभा में जानकारी दी कि सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म को अपनाने से पहले कश्मीर में जैन धर्म का व्यापक प्रचार किया था।

इस दावे का मुख्य आधार मुगल बादशाह अकबर के नवरत्न मंत्री अबुल फ़ज़ल द्वारा लिखित 'आईन-ए-अकबरी' है। अबुल फ़ज़ल ने स्पष्ट रूप से लिखा है कि अशोक ने कश्मीर में पहली बार जैन धर्म का परिचय और प्रचार करवाया था। एडवर्ड थॉमस अपनी शोध में आगे लिखते हैं कि यह तथ्य केवल मुस्लिम लेखकों तक सीमित नहीं है, बल्कि ब्राह्मणवादी ग्रंथों में भी स्वीकार किया गया है। कल्हण की राजतरंगिणी (जो 1148 ई. में संकलित हुई) अपने से पूर्व के प्राचीन लेखकों जैसे 'पद्म मिहिरा' और 'श्री छविल्लकरा' के ग्रंथों के आधार पर पुष्टि करती है कि अशोक ने कश्मीर में जिन शासन (Jina Sasana) को स्थापित किया था।

पंद्रेथान (पुरानाधिष्ठान) और कश्मीर पुरातत्व विभाग :

सम्राट अशोक के कश्मीर आगमन और निर्माण कार्यों की पुष्टि कश्मीर पुरातत्व विभाग के अभिलेख भी करते हैं। विभाग द्वारा प्रकाशित 'कश्मीर के प्राचीन पुरातत्व' (पुस्तक क्र. 59) के अनुसार, सम्राट अशोक ने ईसा से लगभग 300 वर्ष पूर्व श्रीनगर तहसील में 'पंद्रेथान' (जिसका प्राचीन नाम 'पुरानाधिष्ठान' था) नगर बसाया था। यह स्थान अशोक द्वारा कश्मीर में जैन धर्म के प्रचार और प्रसार का एक प्रमुख केंद्र बना। यह ऐतिहासिक साक्ष्य प्रमाणित करता है कि जैन धर्म का कश्मीर में प्रवेश मौर्य काल या उससे भी पूर्व हो चुका था।

सिंहपुरा (मूर्ति) और डॉ. स्टीन की पुरातात्विक खोज (1890) :

साहित्यिक प्रमाणों को जब पुरातात्विक साक्ष्यों का साथ मिलता है, तो इतिहास जीवंत हो उठता है। वर्ष 1890 में प्रसिद्ध पुरातत्वविद डॉ. एम. ए. स्टीन (Dr. M. A. Stein) ने कश्मीर के सीमावर्ती क्षेत्रों में एक महत्वपूर्ण खोज की।

डॉ. स्टीन ने कथा (Katha) जिले की साल्ट रेंज (Salt Range) में स्थित 'सिंहपुरा' (जिसे वर्तमान में 'मूर्ति' कहा जाता है) नामक स्थान पर उत्खनन किया। यहाँ 100 फीट ऊंची पहाड़ी पर उन्हें एक प्राचीन जैन स्तूप और मंदिर के अवशेष प्राप्त हुए। डॉ. स्टीन के शोध के अनुसार, यह वही पवित्र स्थान है जहाँ भगवान महावीर ने अपने कश्मीर प्रवास के दौरान विचरण किया था।

इम्पीरियल गजट के साक्ष्य:

इम्पीरियल गजट (पृष्ठ सं. 151) पर प्रकाशित विवरण के अनुसार, सम्पूर्ण कश्मीर में बहने वाली कटास नदी के किनारे स्थित इस 100 फुट ऊँची पहाड़ी पर प्राचीन जैन मंदिर के अवशेष मिले हैं। डॉ. स्टीन द्वारा यहाँ से प्राप्त सामग्री इस बात का भौतिक प्रमाण है कि यह क्षेत्र कभी जैन संस्कृति का गढ़ था।

संग्रहालयों में सुरक्षित जैन कला और स्थापत्य :

डॉ. स्टीन की खुदाई और अन्य सर्वेक्षणों में प्राप्त अमूल्य धरोहरें आज भी भारत और पाकिस्तान के संग्रहालयों में सुरक्षित हैं, जो उस स्वर्णिम अतीत की गवाही देती हैं।

*लाहौर संग्रहालय (Lahore Museum): सिंहपुरा (मूर्ति) से प्राप्त प्राचीन जैन मंदिर का एक अत्यंत कलात्मक स्तंभ (Pillar) आज लाहौर म्यूजियम में सुरक्षित है। इस स्तंभ पर की गई नक्काशी और अलंकरण कश्मीर की विशिष्ट वास्तुकला और गांधार शैली के समन्वय को दर्शाते हैं। (लाहौर म्यूजियम की वर्ष 1908 की रिपोर्ट में इसका विस्तृत वर्णन है)।

*चंडीगढ़ संग्रहालय: इसी उत्खनन में प्राप्त एक जैन तीर्थंकर प्रतिमा का मस्तक (Head) चंडीगढ़ संग्रहालय में संरक्षित है। यह प्रतिमा शिल्प कला का अद्भुत नमूना है, जिसमें शांत भाव और ध्यानस्थ मुद्रा स्पष्ट परिलक्षित होती है।

ये मूर्तियाँ और स्तंभ न केवल धार्मिक प्रतीक हैं, बल्कि उस समय की उन्नत कश्मीरी शिल्प कला के भी परिचायक हैं।

चीनी यात्री ह्वेन त्सांग का विवरण :

सातवीं शताब्दी में भारत आए प्रसिद्ध चीनी बौद्ध भिक्षु ह्वेन त्सांग (Hiuen Tsang) ने भी अपने यात्रा वृतांत में 'सिंहपुरा' का वर्णन किया है। डॉ. स्टीन के अनुसार, ह्वेन त्सांग ने जिस सिंहपुरा का उल्लेख किया है, वह यही 'मूर्ति' नामक स्थान है जहाँ जैन स्तूप और मंदिर विद्यमान थे। एक बौद्ध यात्री द्वारा जैन स्थल का उल्लेख करना यह सिद्ध करता है कि 7वीं सदी तक भी कश्मीर और उसके आसपास के क्षेत्रों में जैन धर्म का प्रभाव बना हुआ था।

शत्रुंजयावतार तीर्थ: राजा जितारि की ऐतिहासिक यात्रा :

पुरातत्व के साथ-साथ जैन ग्रंथों में भी कश्मीर का उल्लेख मिलता है। श्वेतांबर जैनाचार्य श्री रत्नशेखरसूरि ने 'श्राद्धविधि प्रकरण' में कश्मीर के जैन तीर्थों का

अत्यंत रोचक विवरण दिया है। इसमें 'विमलाचल तीर्थ' (शत्रुंजय) के अवतरण की घटना का उल्लेख है, जो पांचवें तीर्थंकर भगवान सुमतिनाथ के समय से भी पूर्व की मानी जाती है।

कथा के अनुसार, मलयदेश के राजा जितारि ने आचार्य श्रुतसागर से विमलाद्री (शत्रुंजय) महातीर्थ का माहात्म्य सुना और ससंघ यात्रा का संकल्प लिया। राजा का संकल्प कठोर था- जब तक वे विमलाचल पहुँचकर श्री ऋषभदेव की वंदना नहीं कर लेंगे, तब तक अन्न-जल ग्रहण नहीं करेंगे। राजा, उनकी रानियाँ (हंसी और सारसी) और मंत्री सिंह सहित पूरा संघ कश्मीर के वन क्षेत्र में पहुँचा। यात्रा कठिन थी और भूख-प्यास से राजा के प्राण संकट में पड़ने लगे। मंत्रियों के आग्रह पर भी राजा ने कहा, "प्राण जाएं, परंतु संकल्प न टूटे।"

राजा की अटूट श्रद्धा देखकर विमलाद्री के अधिष्ठायक देव ने स्वप्न में प्रकट होकर उन्हें आश्वस्त किया। अगले दिन प्रातः, देव ने अपनी दिव्य शक्ति से कश्मीर के उसी वन में 'विमलाचल तीर्थ' का प्रतिरूप स्थापित कर दिया। राजा और संघ ने वहां भगवान ऋषभदेव के दर्शन किए और अपना अभिग्रह पूर्ण किया। राजा जितारि की भक्ति इतनी प्रगाढ़ थी कि उन्होंने नगर बसाने के लिए सात बार उस तीर्थ की परिक्रमा की। अंततः वहां 'विमलपुर' नामक नगर बसाया गया और उस तीर्थ को 'शत्रुंजयावतार' (शत्रुंजय का अवतार) के नाम से जाना गया।

अन्य शासकों का योगदान: ललितादित्य और राजा कय्य

कश्मीर के प्रतापी राजा ललितादित्य मुक्तापीड़ (8वीं शताब्दी) अपनी उदार धार्मिक नीति के लिए जाने जाते थे। उन्होंने सूर्य (मार्तंड), विष्णु और बौद्ध स्तूपों के साथ-साथ भव्य जैन मंदिरों का भी निर्माण करवाया। उल्लेख मिलता है कि उन्होंने एक विशाल जिनालय बनवाया था, जिसमें 84,000 तोला (लगभग 840 किलो) सोने का उपयोग किया गया था। यह उनकी सर्वधर्म समभाव नीति और जैन धर्म के

प्रति श्रद्धा का परिचायक है। इसी प्रकार, राजा कय्य ने 'कय्यस्वामी' नामक जिनालय बनवाया जहाँ 'सर्वज्ञमित्र' नामक जैन मुनि निवास करते थे। तुखार निवासी मंत्री चंकुण ने 'चंकुणविहार' बनवाया, जिसमें भगवान की स्वर्णमयी प्रतिमाएं स्थापित थीं।

निष्कर्ष :

उपर्युक्त ऐतिहासिक प्रमाणों, राजतरंगिणी के श्लोकों, पुरातात्विक अवशेषों और प्राचीन कथाओं का विश्लेषण करने पर यह निर्विवाद रूप से सिद्ध होता है कि कश्मीर का इतिहास जैन धर्म के बिना अधूरा है। सतिसर से लेकर श्रीनगर तक की यात्रा में जिन शासन की पताका वहां फहराती रही है। आज आवश्यकता है कि कश्मीर के बिसरा दिए गए इस इतिहास को पुनर्जीवित किया जाए। वितस्ता नदी के किनारे दबी पड़ीं वे शिलाएं, लाहौर संग्रहालय का वह स्तंभ और चंडीगढ़ संग्रहालय में रखी वह प्रतिमा, आज भी अपनी मूक भाषा में 'जैन नगर' की गाथा सुना रहे हैं। यह शोध आलेख उस लुप्त कड़ी को जोड़ने का एक विनम्र प्रयास है, ताकि आने वाली पीढ़ियाँ जान सकें कि कश्मीर केवल शैव और सूफी मत का ही नहीं, अपितु जैन धर्म की अहिंसक परंपरा का भी एक महान केंद्र रहा है।

सन्दर्भ सूची

1. Annual Report of the Lahore Museum. 1908. (लाहौर संग्रहालय में स्थित जैन पिलर के सन्दर्भ में).

2. Stein, M.A. Archaeological Reconnaissances in North-Western India and South-Eastern Iran. London: Macmillan, 1937. (सिंहपुरा/मूर्ति उत्खनन और चंडीगढ़ संग्रहालय की प्रतिमा के सन्दर्भ में).

3. Thomas, Edward. Jainism, or The Early Faith of Asoka. London: Trübner & Co., 1877. (पृष्ठ 30-31, रॉयल एशियाटिक सोसाइटी, 26 फरवरी 1877).

4. Allami, Abul Fazl. Ain-i-Akbari. (Vol. II). Translated by Col. H.S. Jarrett. Calcutta: Asiatic Society of Bengal. (सम्राट अशोक और जैन धर्म के सन्दर्भ में).

5. Imperial Gazetteer of India. (Provincial Series: Kashmir and Jammu). Page 151. (कटास नदी और प्राचीन जैन मंदिर के अवशेष).

6. कल्हण. राजतरंगिणी. (प्रथम तरंग). चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान.

7. रत्नशेखरसूरि. श्राद्धविधि प्रकरण. (तीर्थ माहात्म्य खंड). यशोविजय जैन ग्रन्थमाला.

8. Kashmir Archaeology Department. Ancient Monuments of Kashmir. Book No. 59. (पंद्रेथान/अशोक के सन्दर्भ में).

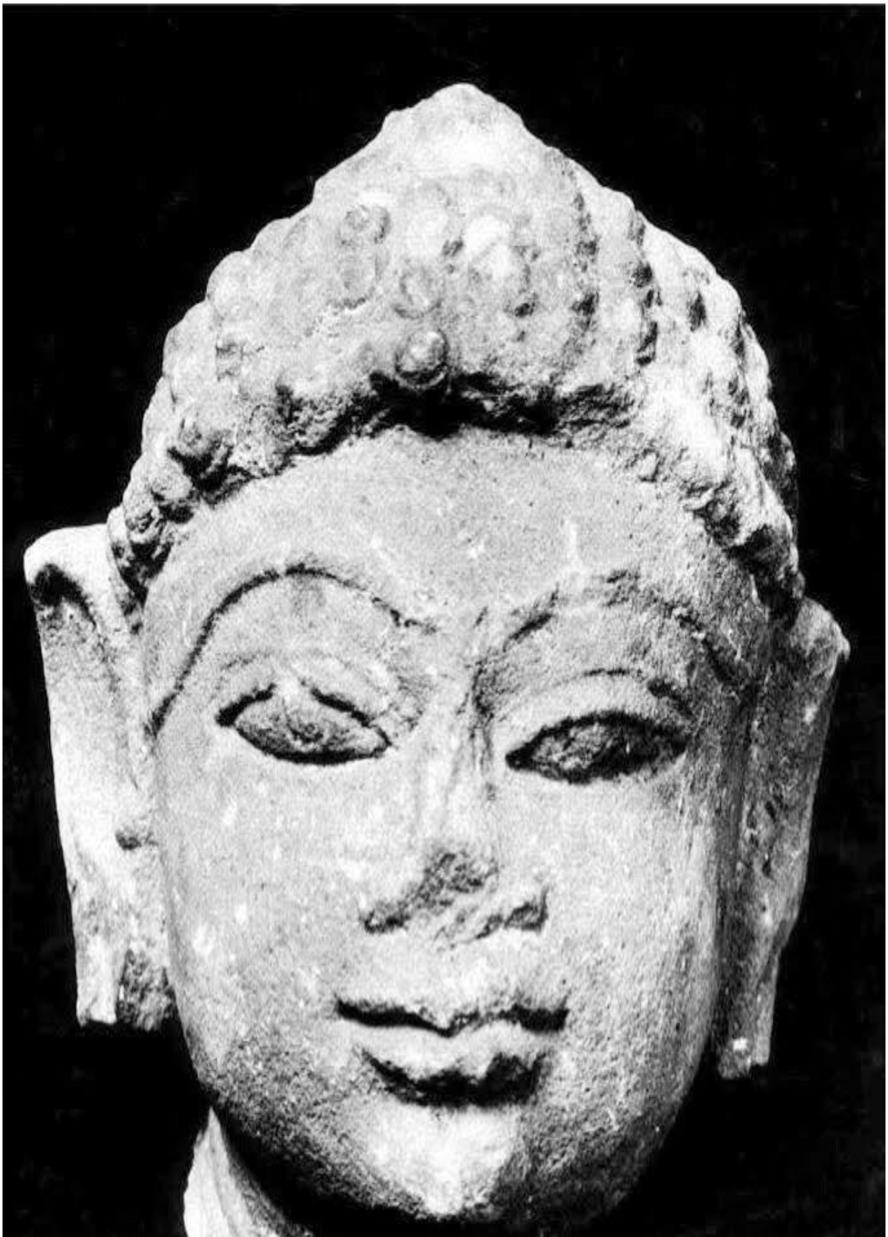

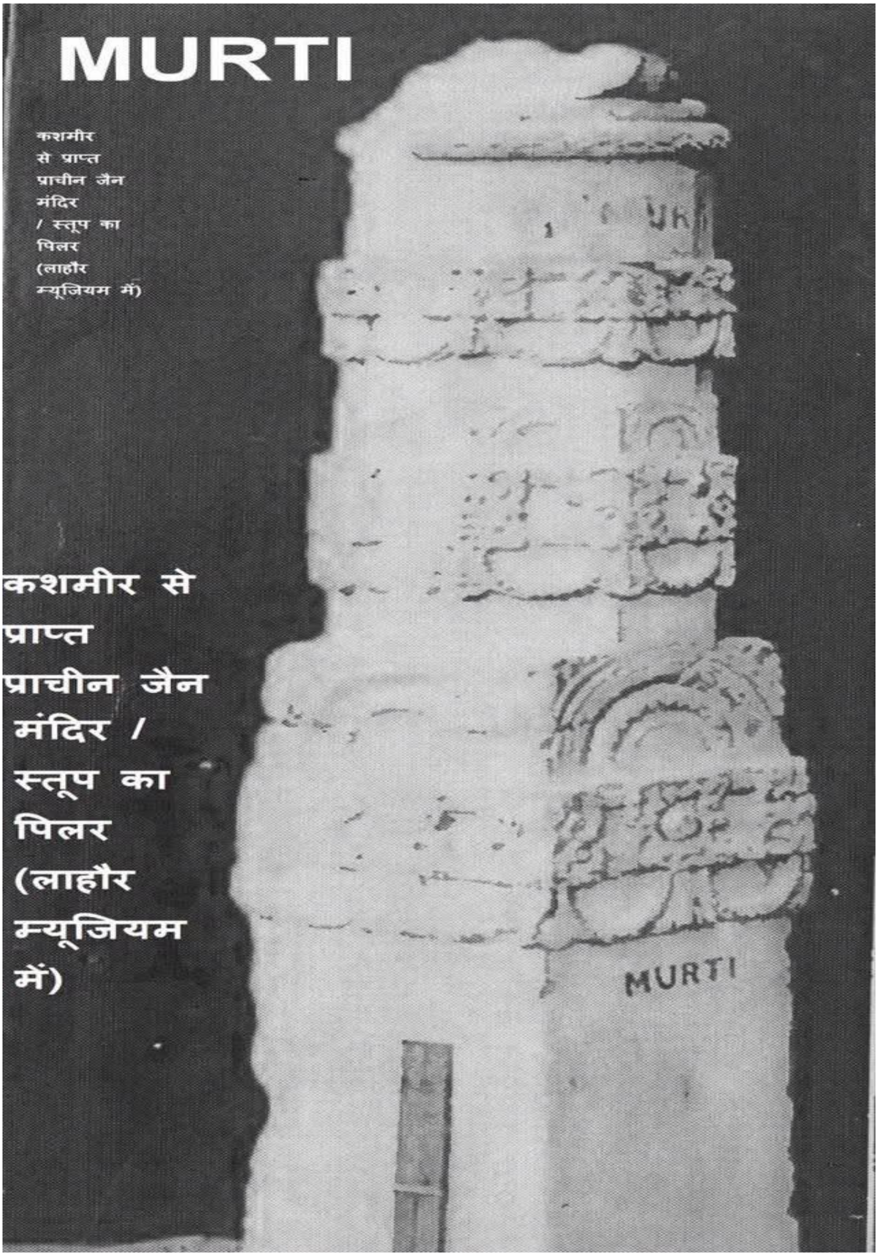
MURTI
कशमीर से प्राप्त प्राचीन जैन मंदिर / स्तूप का पिलर (लाहौर म्यूजियम में)
कशमीर से प्राप्त प्राचीन जैन मंदिर / स्तूप का पिलर (लाहौर म्यूजियम में)
MURTI

-जैन आचार्य विजय रत्नाचल सूरि
पद: जैन आचार्य एवं संशोधक संपादक
पता: आचार्य विजय रत्नाचल सूरि
% त्रिपदी प्रकाशन
डी-४०३, दिव्यजीवन रेसीडेंसी, समय बंग्लोज़ सामे,
सुकन चार रस्ता, निकोल - नरोड़ा रोड़, निकोल, अमदावाद (गुज.)
पिन:- 382350
मो. :- 86670 93557
ईमेल: tripadiprakashan@gmail.com
मोबाइल नंबर: +91 86670 93557